दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 56 ❑ अंक-10 ❑ दिल्ली ❑ फरवरी, 2018 (द्वितीय) ❑ मूल्य : 2 रु.

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, तेलंगाना प्रदेश का प्रथम दलित साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

दलित साहित्यकार प्रतिस्पर्धा कर अपने श्रम से लम्बी लकीर खींचें

–डॉ. सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, तेलंगाना प्रदेश का प्रथम दलित साहित्यकार सम्मेलन 4 फरवरी, 2018 को बाल विकास हाल, फातिमा नगर (काजीपेट) वारंगल में आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन विधानसभा के अध्यक्ष (स्पीकर) श्री एस. मधुसूदन चारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर, भगवान बुद्ध, बाबा साहब डा. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम के चित्रों पर माल्यार्पण भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर समारोह में मुख्य अतिथि थे। सम्मेलन में अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. जय सुमनाक्षर, पंजाब प्रदेशाध्यक्ष श्री तीरथ तोंगडिया, उत्तर प्रदेश अकादमी की प्रदेश अध्यक्षा डा. लालती देवी, हरियाणा प्रदेश के महासचिव डा. सुरेन्द्र कुमार सेलवान विशिष्ठ अतिथि थे। अकादमी की दक्षिण भारत राज्य समिति के महामंत्री बाबू जार्ज वटोली, श्री दसयाम विनायक भास्कर, एम.एल.ए. श्री अरूरी रमेश, विधायक ने सम्मानीय अतिथि के रूप में शामिल होकर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई।

समारोह का प्रारम्भ काजीपेट में स्थित बाबा साहब डा. अम्बेडकर व बाबू जगजीवन राम की आदमकद प्रतिमाओं पर राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा माल्यार्पण करने से हुआ। वहीं से जलूस की शक्ल में डांडिया नृत्य करते, ढोल–ढपड़ी बजाते और 'जयभीम' के नारे लगाते श्रद्धालु लोगों का जत्था फातिमा नगर के बाल विकास कान्फ्रेंस हॉल पहुंचा, जहां बुद्ध वन्दना व भीम वन्दना के बाद कार्यक्रम शुरू हुआ। अकादमी के तेलंगाना प्रदेश महामंत्री श्री एम. एल. नारायण ने सम्मेलन में पधारे सभी महानुभावों का स्वागत किया। अकादमी के तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र मनु ने प्रदेश में गत वर्षों में हुए दलितोत्थान कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए सभी अतिथियों का भावभीनी शब्दों में अभिनन्दन किया।

तेलंगाना विधानसभा के प्रथम स्पीकर श्री एस. मधुसूदन चारी ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि मैं यहां आकर अपने को गौरवान्वित समझ रहा हूं क्योंकि यहां सम्मेलन में पधारे सभी दलित साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, कलाकार, समाजसेवी सदियों से वर्ण व्यवस्था में छिन्न–भिन्न हुए समाज को बदलने में लगे हैं और हर व्यक्ति को उसके हिस्से का सम्मान दिलाने में जुटे हैं। उन्होंने तेलंगाना प्रदेश अकादमी के अध्यक्ष एडवोकेट जितेन्द्र 'मनु' को बधाई दी कि उनके इस सम्मेलन के कार्यक्रमों की महक दूर तक जायेगी और दलितों के अन्दर स्वाभिमान जगायेगी।

तेलंगाना विधानसभा के सदस्य श्री दसयाम विनायक भास्कर तथा श्री अरूरी रमेश ने भी इस प्रथम दलित साहित्यकार सम्मेलन में पधारे प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि राजनेताओं की अपेक्षा दलित लेखक व दलित समाजसेवक समाज की सोच व रवैये को बदलने में ज्यादा कारगर साबित हो सकते हैं क्योंकि वे निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं और उनके सामने एक ही लक्ष्य होता है समाज को बदलने का। दलित साहित्यकारों की कलम की ताकत तलवारों से भी ज्यादा तेज होती है।

अकादमी की दक्षिण भारत राज्य समिति के महामंत्री बाबू जार्ज वटोली ने कहा कि अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी के नेतृत्व में दलित साहित्यकार सजगता से आगे बढ़ रहे हैं और अपनी भाषा में वे साहित्य सृजन कर रहे हैं जिससे दलित समाज में जन चेतना जाग्रत हुई।

अकादमी की उत्तर प्रदेश अध्यक्षा डा. लालती देवी ने कहा कि आज दलित साहित्य किसी की दया का मोहताज नहीं है और न ही उसे छंद अलंकार या उपमा में बांधा जा सकता है। उस पर किसी व्याकरण के नियम भी लागू नहीं होते, क्योंकि उसने अपनी परिभाषा, अपनी मर्यादा, अपना व्याकरण स्वयं घड़ा है। दलित साहित्य आज सभी विधाओं में मौजूद है और निडरता के साथ आगे बढ़ता जा रहा है।

अकादमी के पंजाब प्रदेशाध्यक्ष श्री तीरथ तोंगडिया ने कहा कि अभी जब तक समाज में ऊंच–नीच की भावना

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

जुमलाबाजी या वायदा खिलाफी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 के लोकसभा चुनाव में देश के सभी भागों में चुनाव रैली करते हुए अपने भाषण में अक्सर कहते थे कि चुनाव जीतकर अपनी सरकार बनते ही वह 100 दिनों के अन्दर विदेशों में जमा देश का काला धन वापिस ले आयेंगे, फिर देश के प्रत्येक नागरिक के बैंक खाते में 15-15 लाख रुपये जमा करा देंगे। देश से कालाबाजारी, भ्रष्टाचार, दलालगीरी, चोरबाजारी खत्म कर देंगे। प्रत्येक साल 2 करोड़ युवकों को नौकरियां देंगे। देश की पूर्ण सुरक्षा करेंगे और पाकिस्तान हमारे एक सैनिक का सिर काट के ले गया है, हम उसके 10 सैनिकों का सिर काट कर लायेंगे। इसके अलावा खाद्य पदार्थों की कीमतों पर रोक लगेगी। हम महंगाई खत्म करेंगे। सभी को सस्ती शिक्षा मुहैया करायेंगे। देश का कोई नागरिक भूखा न मरे उसके लिए रोजी–रोटी का बन्दोबस्त करेंगे। कोई बेघर नहीं रहेंगा, सबको अपना मकान मुहैया करायेंगे, मां–बहन–बेटी को पूर्ण सुरक्षा दी जायेगी और गुण्डागर्दी, भय, डर, असुरक्षा का खात्मा किया जायेगा। देश में शान्ति, अमन, भाईचारा, समता, सम्मान का वातावरण कायम करेंगे। हिन्दू–मुस्लिम–सिख– ईसाई–सब हैं आपस में भाई–भाई। किसी भी साम्प्रदायिक तनाव के बिना सब धर्म, उपासना, श्रद्धा, आस्था के स्वतंत्रतापूर्वक रहेंगे।

अपने लोकसभा चुनाव अभियान के दौरान नरेन्द्र मोदी कांग्रेस पार्टी व उनके नेताओं पर दोषारोपण करते हुए कहते थे कि उन्होंने देश को लूट लिया है। बोफार्स कांड, जी–2 कांड, कोयला–खदान कांड, पनडुब्बी–हेलीकाप्टर खरीद कांड में भारी घूस खाई है। वे सोनिया गांधी के दामाद वान्ड्रा के भूमि खरीद घोटाले पर जोर–जोर से बोलते हुए कहते थे कि हमारी पार्टी बीजेपी की सरकार बनते ही इन सभी घोटालेबाजों पर कार्रवाई होगी और ये सब जेल की सलाखों के पीछे होंगे। और इस सबके लिए 56 इंच का सीना चाहिए जो सिर्फ 'मोदी' के पास है। आप एक बार बस बीजेपी का 'कमल' खिलाकर केन्द्र में उसकी सरकार बनवा दो, बस फिर आप कांग्रेस मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त नया भारत देखेंगे।

नरेन्द्र मोदी के जोशीले भाषण और नये भारत के आश्वासन पर 2014 के लोकसभा चुनाव में लोगों ने अपनी पार्टी निष्ठा को छोड़ 'कमल' पर मोहर लगाकर बीजेपी को खुलकर वोट दिया। इससे भारी मतों से बीजेपी की जीत हुई और केन्द्र में भाजपा की सरकार में नरेन्द्र मोदी जी को देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद लोगों में पूरी आशा जगी थी कि अब तो नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वे सब वायदे पूरे होंगे जो उन्होंने भाजपा के लिए वोट मांगते हुए किये थे। इसी आशा में जब प्रधानमंत्री मोदी जी ने अचानक हजार व पांच सौ रुपये के नोटों के चलन पर 'नोटबंदी' करके दो हजार व पांच सौ रुपये के नये नोट जारी करने की घोषणा की तो अधिकांश लोगों ने उनके इस कदम की इसलिए सराहना की कि इससे 'काला धन' पर अंकुश लगेगा और भ्रष्टाचार मिटेगा। इसलिए वे अपने पुराने नोटों को बदलवाने के लिए घंटों–घंटों बैंकों में लाईन में लगे रहे, धक्के–मुक्के खाते रहे, भूखे–प्यासे रहकर भी।

पर कुछ ही दिनों में लोगों ने देखा कि इस नोटबन्दी से भ्रष्टाचार व कालाबाजारी पर तो अंकुश लगा नहीं, बल्कि उनके रोजगार के साधनों पर अंकुश जरूर लग गया। नोटबन्दी के कारण लोगों के पास मुद्रा न होने के कारण छोटे–मोटे कल–कारखाने, दुकान, दफ्तर जरूर बन्द हो गये। भवन निर्माण बंद होने पर लोगों को काम मिलना बन्द हो गया। रोजगार

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/-
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/-
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

आरक्षण : सामाजिक समता का साधन

डा. अनिल कुमार

भारतीय संविधान में दलितोत्थान के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है। 1990 में जब वी.पी. सिंह ने पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण को लागू किया था तो राष्ट्रीय स्तर पर आरक्षण विषय पर बहस छिड़ गई थी। सवर्ण समाज अक्सर आरक्षण के प्रावधान को समाप्त करने की मांग करता रहा है। उन्हें यह याद करना चाहिये कि सवर्ण समाज ने दलितों को सदियों से वंचित रखा। डा. अंबेडकर के अनुसार मनुस्मृति ने एक वर्ण को शास्त्र, दूसरे को शस्त्र और तीसरे को धन देकर शूद्र वर्ण यानी दलितों को इन तीनों से वंचित रखकर उन्हें सवर्णों का गुलाम बना दिया गया। एक तरह से सवर्णों ने अपने लिए शास्त्र, शास्त्र और धन को आरक्षित कर लिया। जब सदियों से वंचित दलितों के लिए आरक्षण के प्रावधान किए गए तो अब उन्हें नागवार गुजरने लगा है। यह बात आरक्षण विरोधियों के तर्कों से स्पष्ट होता है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि 'विषमता' भारतीय समाज की विशिष्टता है और 'समानता' का नारा अयथार्थ है। आरक्षण को आज भी ईमानदारी से लागू नहीं किया जाता है। अगर, मगर, लेकिन की आड़ में उससे बचने की तरकीब निकाली जाती है। वस्तुतः आरक्षण सामाजिक समता का साधन है। लेकिन जिस प्रकार मनु ने चतुर्थ वर्ण बनाकर उनसे घृणित कार्य करवाने के लिए दलित का आरक्षित कर लिया। उसी प्रकार आज भी वास्तविकता यह है कि आरक्षण में केवल चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी का कोटा ही पूरा पूरा भरा जाता है। शेष श्रेणियों की नौकारियों में आरक्षण का प्रावधान का ईमानदारी से पालन नहीं किया जाता है। सवर्ण समाज आरक्षण समाप्त करने का समर्थन करते हुए कहता है कि यदि आरक्षण न हो तो भारत में सभी समान समझे जायेंगे। लेकिन वह यह भूल जाता है कि भारतीय समाज में मनुष्य का स्तर उसके जन्म से निर्धारित होता है। कभी यह कहा जाता है कि जो लोग आरक्षण का लाभ उठाकर सम्पन्न हो चुके हैं उनके लिए आरक्षण की सुविधा समाप्त कर दी जाए। यह लोग दलितों में केवल गरीब और अशिक्षित देखना चाहते हैं। दलितों का गरीब और अशिक्षित तबका अपनी गरीबी और अशिक्षा के कारण आरक्षण का लाभ नहीं उठा पाता है। आरक्षण समाप्त करने की दशा में दलितों का शिक्षित और सम्पन्न तबका अपनी शिक्षा और कथित सम्पन्नता के कारण आरक्षण से वंचित रह जाएगा। प्रश्न यह उठता है कि क्या भारतीय समाज में वर्ण–विषमता समाप्त हो गई है? अगर नहीं तो आरक्षण के प्रावधान को क्यों समाप्त कर दिया जाए? आरक्षण को समाप्त करने का औचित्य तभी है जब सवर्ण हिंदू समाज स्वेच्छा से वर्ण व्यवस्था को समाप्त करने की घोषणा करे; विषमता की व्यवस्था प्रदान करने वाले धार्मिक ग्रंथों से पूर्णतः तौबा कर ले और दलितों से रोटी–बेटी का संबंध स्थापित कर ले। इसके साथ–साथ सम्पूर्ण समाज सदियों से दलितों पर किए गए अत्याचार के लिए दलित समाज से माफी मांगे। जैसा कि ऑस्ट्रेलिया में गोरों ने अपने अत्याचारों के लिए कालों से माफी मांगी।

आरक्षण के संबंध में आरक्षण विरोधी यह तर्क भी देते हैं कि इसे धर्म पर आधारित नहीं होना चाहिए। वहीं दलितों के धर्मांतरण के बाद उनकी आरक्षण सुविधा को समाप्त करने का जायज करार देते हैं। यद्यपि व्यक्ति वही है और उसकी आर्थिक दशा भी वही है। जहां तक सामाजिक सम्मान की बात है यह अनुभवों से ज्ञात है कि दलित का दलितत्व मुसलमान, सिक्ख, ईसाई व बौद्ध होने पर भी नहीं छुटता है वहां भी उनके साथ विषमता का व्यवहार किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है। अतएव धर्मांतरित दलितों के लिए आरक्षण को समाप्त करने का कोई तुक नजर नहीं आता। इसके बावजूद यदि सवर्ण समाज केवल हिंदू दलितों के आरक्षण के पक्ष में हैं तो इसका तात्पर्य है कि वह आरक्षण को प्रलोभन या रिश्वत के रूप में लेते हैं जो वे दलितों को हिंदू बने रहने के लिए वे देने को तैयार हैं। वे दलितों को लोभी या रिश्वतखोर या भिखारी समझते हैं।

वास्तव में आरक्षण भीख, रिश्वत अथवा प्रलोभन नहीं है। यह दलितों का अधिकार है; सवर्ण समाज की दया नहीं। दया अधिकार के अनुपात में हमेशा बहुत कम होती है। दलितों को सहानुभूति नहीं, अपितु अधिकार चाहिए; समान अधिकार चाहिए, इससे कुछ भी कम नहीं। आरक्षण तो केवल विषमता से संरक्षण का साधन है। संरक्षण न्याय नहीं होता, न्याय तो तब होगा जब जनसंख्या के अनुपात में शासन व प्रशासन में दलितों को स्थान दिया जायेगा। 1931 में देश में हर जाति की जनगणना हुई। स्वतंत्रता के बाद आज तक जातियों की जनगणना नहीं करायी गई। कहा जाता है कि जाति के आधार पर जनगणना से देश की एकता को खतरा है। अगर यह सही है देश की एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए तो सवर्ण समाज जातियता को क्यों नहीं समाप्त करना चाहता है? वास्तव में जाति की जनगणना से यह स्पष्ट हो जायेगा कि देश में किस जाति के पास देश के संसाधन उनकी जनसंख्या के अनुपात से अधिक है इसीलिए जातियों की जनगणना कराने से भारत सरकार बचती रही है। अगर जातियों के आधार पर जनगणना करायी जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि सवर्ण समाज की जितनी आबादी है उससे कई गुणा अधिक देश के संसाधनों पर उनका अधिकार है। •

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–
सम्पादक : हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

'दलित साहित्य' नामकरण की सार्थकता

• आप्पाराव चव्हाण, पुणे

'दलित साहित्य' के नामकरण संबंधी चर्चा करने से पहले 'दलित' और 'दलित साहित्य' निर्माण की ऐतिहासिकता को समझ लेना आवश्यक है। भारतीय 'समाज व्यवस्था' चार वर्णों द्वारा बनवाई गई। वे वर्ण हैं–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जिसे वैदिक परंपरा आदर्श मानती है। इनमें जो चौथा वर्ण है 'शूद्र' इसका कार्य है अपने ऊपरवाले तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) की सेवा करना। इस वर्ण में कई जातियां और उसकी भी उपजातियां गिनाई गई हैं, फिर उनमें भी कुछ जातियां प्रतिष्ठित हैं तो कुछ जातियां अप्रतिष्ठित। इन अप्रतिष्ठित जातियों को ही अस्पृश्य एवं अछूत कहा गया। वह इसलिए कि उनकी छाया और स्पर्श से सवर्ण लोग अपवित्र हुआ करते थे ऐसा सवर्णों का मानना था, जो आज भी माना जाता है।

वर्ण व्यवस्था समर्थक सवर्णों ने इन जातियों पर बहुत जुल्म ढहाए। सवर्णों ने निम्न जातियों को शिक्षा का अधिकार नहीं दिया, संस्कृत भाषा बोलने का अधिकार नहीं दिया और न ही धर्म संदेश सुनने का अधिकार दिया। अच्छे कपड़े तो मिलने नहीं थे पर कभी खुद की कमाई से खरीदे भी गए तो, उसे पहनने तक का अधिकार नहीं दिया। अगर पहने भी तो इस प्रकार पहने की वह घुटनों के नीचे न आने पाए। इस प्रकार का कानून लगाने के पीछे सवर्णों के दो उद्देश्य थे। पहला यह कि वह व्यक्ति कुरूप लगे, जिससे सवर्ण के मन में उसके प्रति अनाकर्ष पैदा हो जाए। दूसरा यह कि बेढंग वेशभूषा और केशभूषा से उसकी जाति का अनुमान लगाने में आसानी हो सके।

इन जातियों से तरह–तरह के काम तो करवा लिए जाते थे पर उस तुलना में मजदूरी नहीं दी जाती थी। जैसे कि सवर्ण किसान अपने खेत की रखवाली अछूत से तब तक करवा लेता था जब तक परिपक्व फसल खलिहान तक न पहुंच जाए। इसके बदले में अछूत को थोड़ा–सा धान दिया जाता था। उसी प्रकार घर–तबेले की लिपाई–पोताई के लिए बासी रोटी, पुराने कपड़े और जूते दिए जाते थे। परंतु अछूतों द्वारा ही स्वच्छ किए गए घर में उन्हीं को प्रवेश नहीं दिया जाता था। उनकी चाय और पानी पीने की प्याली तक अलग रखी जाती थी। अछूत भी यह अन्याय–अत्याचार चुपचाप सह लेते थे, क्योंकि वे गुलाम बनवाए गए थे। इन्हीं अछूतों एवं गुलामों को 'दलित' शब्द से उल्लिखित किया गया, जिसका अर्थ सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से दबाया हुआ, रौंदा या कुचला हुआ समाज है। इसी समाज में जन्मे हुए साहित्यकारों द्वारा लिखा गया साहित्य 'दलित साहित्य' कहा गया।

दलितों में जब थोड़ा–सा सुधार दिखाई देने लगा था तब अंग्रेज सरकार की सत्ता आई थी। अंग्रेज कालीन दलितों के पूर्व भी मध्यकालीन निम्न जातीय संतों ने दलित–शोषण के विरोध में अपनी आवाज उठाई थी पर कुछ लोग कहते हैं कि संतों ने सवर्णों के अन्याय–अत्याचार के खिलाफ कोई संघर्ष नहीं किया। उन्होंने तो ईश्वर की शरण ली थी। यह गलत धारणा है, वह इसलिए कि सारा मध्यकाल भक्ति में डूबा हुआ था और सारे समाज का मानना था कि सारी सृष्टि का कर्ता–धर्ता 'ईश्वर' है तब बताओ! कि अनपढ़ एवं ज्ञान से वंचित संत अपने दुःख–दर्द की शिकायत लेकर और किसके पास जा सकते थे? अतः मध्यकालीन संतों ने अपने युग और परिस्थिति अनुरूप उपलब्ध भक्ति–रूपी साधन के माध्यम से सवर्णों से होने वाले शोषण का विरोध किया था; पर वह सीमित ही माना जा सकता है। आधुनिक काल में डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कार्य से प्रेरणा लेकर दलितों में लिखने वालों की संख्या बढ़ी। अनेक श्रेष्ठ कथा, नाटक, काव्य और आत्मकथाएं लिखी जाने लगी।

आरंभ में सवर्णों ने निम्न जातीय समाज के लोगों को 'मानव' रूप में नहीं अपनाया। इसलिए उन्हें सभी प्रकार के मानवीय अधिकारों से वंचित रखकर उन्हें 'अछूत' करार दिया। इस 'अछूतपन' से मुक्त होने के लिए अर्थात् 'मानव' बनने के लिए अपने मांगों को लेकर जब दलित अपने–आपको साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने लगे तो उनके साहित्य को भी असभ्य कला कहकर अस्वीकृत कर दिया। इसलिए आगे दलित साहित्यकारों ने अपने साहित्य को पारंपरिक मराठी साहित्य प्रवाह से अलग रखा।

1960 से अब तक दलित साहित्यकारों ने पारंपरिक साहित्य प्रवाह का मुकाबला 'दलित साहित्य' नाम धारण करके ही किया। अतः दलित साहित्य रचने का, 'दलित साहित्य' नाम धारण करने का और दलित साहित्य की स्वतंत्र धारा बनाए रखने का मूल कारण ही 'दलितपन' और 'दलित' शब्द है। यह दलित साहित्य के उदय और विकास का इतिहास है।

कुछ लोग कहेंगे कि हमारा धर्मांतरण होने के बाद हम दलित रहे नहीं तो अपने आपको दलित क्यों समझें? इन लोगों को यह समझना आवश्यक है कि धर्मांतरण केवल महाराष्ट्र में बड़े पैमाने पर हुआ है सारे भारत में नहीं। महाराष्ट्र छोड़कर अन्य राज्यों के निम्न जातीय लोगों को अब कहीं जाकर दलित होने का एहसास होने लगा है। इसलिए वे 'दलित साहित्य' से जुड़ना चाह रहे हैं। 'दलित साहित्य' प्रवाह मात्र महाराष्ट्र और उसकी भाषा मराठी तक ही सीमित नहीं रहा, वह अब समस्त भारतीय दलितों का और उनकी कई भाषाओं का बनता जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मात्र 'दलित' शब्द बदलने से कुछ नहीं होता। शब्द बदलने से दलितों की सामाजिक और धार्मिक परिस्थिति में कोई सुधार नहीं होगा। उसके लिए तो भौतिक–परिस्थितियों में सुधार होना आवश्यक है और वह तभी संभव है जब दलितों का उत्पादन साधनों और राजनीतिक सत्ता पर अधिकार होगा। इस प्रकार की दलितों की स्थिति जब होगी तब भारतीय समाज से ऊंच–नीच एवं छुआछूत की भावना नष्ट होगी। जिस दिन भारतीय समाज इस अवस्था में पहुंचेगा तब ही 'दलित साहित्य' को 'दलित साहित्य' कहे या न कहें इस प्रकार की चर्चा करना संभव है। •

रामा स्वामी नायकर पेरियार

सदियों से धर्म के नाम पर करोड़ों मनुष्यों को अछूत मानकर उनके जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित प्रचलित अधर्म के विरुद्ध श्री ई.वी. रामा स्वामी नायकर ने पूरी दृढ़ता और योग्यता के साथ अपनी समस्त शक्तियों को केन्द्रित करके जातिवाद के विरुद्ध सक्रिय विद्रोह की पुरजोर आवाज बुलन्द की और सामाजिक क्रान्ति का झंडा खड़ा किया। रामा स्वामी नायकर ने महसूस किया कि अछूतों के आंदोलन को द्विज समाज अपने समाज की आन्तरिक समस्या मानते हैं तथा उसका कोई भी समाधान प्रस्तुत नहीं करते।

श्री रामा स्वामी नायकर पर देव विरोधी, ब्राह्मण विरोधी, वर्ण व्यवस्था विरोधी, हिन्दी विरोधी, परम्परा विरोधी अनेक आरोप उनके ऊपर लगाये गये, वास्तव में वे फ्रांस के दार्शनिक वाल्तेयर जैसे थे। वाल्तेयर में मानसिक ईमानदारी थी। वे जिस कैथोलिक चर्च में पले, उसी के सिद्धान्तों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। फ्रांस में भी चर्च का समाज पर बहुत प्रभाव था। सामान्य जनता की आय का दसवां भाग 'इटाइद' नामक कर के रूप में चर्च को जाता था और बड़े–बड़े पादरी अध्यात्म तथा नैतिकता से हटकर वैभव तथा विलास का जीवन बिताते थे। चर्च की व्यवस्था के शिकंजे में फंसी फ्रांस की जनता उनके विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठा पाती थी। वाल्तेयर ने चर्च की कड़ी आलोचना करके रहे। इनका व्यक्तित्व जोशीला तथा नायकवादी था। आम लोग इन्हें पेरियार कह कर पुकारते थे। पेरियार जिसका अर्थ महान या श्रद्धास्पद है। इस शताब्दी के दूसरे दशक में श्री नायकर स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे आगे की पंक्ति में थे। सन् 1919 से 1925 तक कांग्रेस के प्रचार–प्रसार में सक्रिय सहयोग किया था। गांधी जी के आंदोलन अस्पृश्यता के विरुद्ध 'व्यवकम' सत्याग्रह में जेल गये। तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी के मंत्री रहकर भी जातिवाद से लड़ते रहे। सन् 1895 में श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की अध्यक्षता में कांग्रेस का 11वां अधिवेशन पूना में हुआ था। पूना में कट्टर ब्राह्मण वर्ग का जोर था। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि कांग्रेस के पण्डाल में परम्परा से चला आ रहा सुधार सम्मेलन नहीं होने देंगे। यहां तक कि सुधारकों ने अलग पण्डाल बनाकर सम्मेलन करना चाहा तो पण्डाल में आग लगा देंगे। पुलिस संरक्षण में सुधार सम्मेलन हुआ और यह अन्तिम था। नायकर खीजे हुए थे कि आजादी की लड़ाई में भी जातिवाद प्रभावी है।

तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन सन् 1925 में काजीवरम में आयोजित हुआ। कई प्रस्तावों पर श्री नायकर की सहमति नहीं थी। इन्होंने खुले अधिवेशन में ही अपने विरुद्ध षडयंत्र करने की व्यूह रचना का आरोप लेकिन हम तुम्हारी आत्मीय उपस्थिति को यहां अनुभव कर रहे हैं। हम दृढ़तापूर्वक शपथ लेते हैं कि हम अपना पार्टी के आदर्शों के लिए अपने को आपके अद्वितीय नेतृत्व में समर्पित करते रहेंगे।' यह श्री नायकर के काम और नाम का जादू था।

श्री नायकर ने अपने संघर्ष की शक्ति रूप में परिवर्तन करने के लिए जस्टिस पार्टी को 'द्रविड कणगम' का रूप दिया। अपने विचारों के प्रचार के लिए उन्होंने द्रविडियन प्रेस लगाई जिसमें पार्टी का दैनिक पत्र 'विडुतले' और तमिल में एक मासिक पत्र 'अनमई' प्रकाशित किया। उन्होंने एक पुस्तक इरविन इले (भगवान नहीं) प्रकाशित की जिसमें सामाजिक क्रान्ति और समाज सुधार पर अपने तर्कपूर्ण और स्वतंत्र विचार प्रस्तुत कियें हैं। पेरियार दल के कार्यकर्ता काली कमीज पहनते थे। 26 जनवरी, 1952 के हिन्दू दैनिक (मद्रास) में पेरियार ने लिखा कि 'साधारणतय काले रंग का प्रयोग मृत्यु या दुःख को प्रकट करने के लिए किया जाता है। हम द्रविड लोगों की स्थिति मृत्यु से भी गयी बीती है।' हम शूद्र हैं। इस बात को पुराण, इतिहास स्मृति आदि कहते हैं। हम मंदिर में नहीं जा सकते। उस मंदिर में जिसमें पत्थर का भगवान रहता है।

स्मरण रहे कि श्री शंकराचार्य के छोड़ने के प्रमाण मौजूद हैं। 19 फरवरी 1981 को सामूहिक धर्म परिवर्तन (इस्लाम) की घटना के बाद 'मीनाक्षीपुरम' का नाम ही बदल कर रहमत नगर कर दिया गया।

1947 में परियार 70 वर्ष की आयु में अपने से 40 वर्ष छोटी मणि अम्मा नामक स्त्री से विवाह किया। यह घटना दल के विघटन का कारण बन गयी। द्रव्य से द्रमुक की शाखा फूटी और उसके नेता श्री अन्नादुरे हुए। द्रमुक की राजनैतिक शक्ति बढ़ती गयी, यद्यपि पेरियार उस आन्दोलन के पितामह के रूप में बने रहे। श्री अन्नादुरे के निधन और फिर 'द्रविड मुन्नेत्र कणगम' में एक और विघटन होने के साथ ही नायकर फिर सुर्खियों में आये। उन्होंने 'द्रमुक' को समर्थन देने की घोषणा की और दूसरी तरफ यह धमकी कि यदि जाति व्यवस्था समाप्त नहीं की गयी तो वे पृथक होने के लिए आन्दोलन शुरू कर देंगे। उन्होंने तमिलनाडु में कामराज के नेतृत्व में बनी सरकार को तथा 1967 में बनी द्रमुक सरकार को समर्थन दिया था। वे 'द्रविड मुन्नेत्र कणगम' को समर्थन देते रहे।

परियार को हिन्दी वालों से चिढ़ थी। वे कहते थे कि उत्तर में कभी भी रुढ़िवाद और उच्च वर्गों के प्रभुत्व के विरुद्ध सामूहिक रूप से कुछ नहीं किया। वहां की गरीब जनता धर्म के नाम पर और रीति रिवाजों के नाम पर पिसती, घुटती है। 1938 में श्री राजगोपालचार्य की सरकार ने उन्हें हिन्दी विरोधी आन्दोलन के सिलसिले में जेल की सजा दी। हिन्दी के विकास को उन्होंने उत्तर भारतीयों द्वारा द्रविड लोगों के ऊपर आधिपत्य माना। उन्होंने एक आन्दोलन रेलवे स्टेशनों पर हिन्दी लिखे नामों को मिटाने के लिए चलाया। आश्चर्यजनक यह है कि दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना के बाद सबसे पहले पेरियार ने ही अपना इरोड वाला मकान 1922 ई. में हिन्दी प्रचारक विद्यालय खोलने के लिए दिया था, जिसका उद्घाटन पंडित मोती लाल नेहरू ने किया था।

23 जनवरी, 1958 को डॉ. राम मनोहर लोहिया मद्रास के एक सरकारी अस्पताल में पेरियार से मिले थे। पेरियार वहां बंदी के रूप में इलाज करा रहे थे। श्री गौड़े मुरहरि ने दुभाषिया के रूप में काम किया था। डॉ. लोहिया ने कहा कि मैं श्री नायकर के दो गुणों का प्रशंसक हूं। वे कर्मठ व्यक्ति हैं और उनके हृदय में अन्याय का प्रतिकार करने की आग है, पर मैं उनके तरीकों को बहुत नापसन्द करता हूं।

24 दिसम्बर, 1974 को 96 वर्ष की आयु में बैल्लोर क्रिश्चियन मिशन अस्पताल में धर्म जाति और दलित वर्ग के शोषण के विरुद्ध आजीवन संघर्ष करने वाले इस शलाका पुरुष श्री रामा स्वामी नायकर का देहावसान हो गया।•

उनकी छिछालेदर की। ईसाईयों के अन्य विश्वास तथा रुढ़िवादित पर करारी चोट की जिससे समग्र चर्च संगठन तथा रुढ़िवादी ईसाई समाज हिल गया। उसने कहा कि हमें 'एक दूसरे की बेवकूफियों के लिए क्षमा कर देना चाहिये। भगवान की पूजा करो और अच्छे आदमी बनो।'

श्री नायकर ने भी ब्राह्मणों को अपने अहं में अछूतों पिछड़ों को कराहते हुए, उन्हें दुत्कारते हुए देखा था। अमानवीय व्यवहार करते हुए, उनकी परछाई तक से बचते हुए देखा था। विद्रोही पुंज ने वाल्तेयर की तरह सामाजिक समता के पवित्र ध्येय की प्राप्ति के लिए सुख–दुख, कष्ट और कठिनाइयां, मान–अपमान की परवाह किये बिना वह आमरण सतत संघर्ष करते रहे।

श्री ई.वी. रामा स्वामी नायकर स्वयं ब्राह्मण बल्कि शिव भक्त थे। गोरे रंग पर शरीर गठा हुआ तथा गर्दन को आगे से घेर कर छाती चूमती हुई सफेद लम्बी दाढ़ी। धनी भौहों के बीच, चीजों को भेदकर देखने वाली दृष्टि। चेहरा भावहीन, क्रोध और हंसी उसमें सिमटी हुई गंभीर आवाज ऐसा स्वरूप जो पुरातन ऋषि का बोध कराती थी।

इनका जन्म 17 सितम्बर, 1878 ई. को इरोड में हुआ था। इनके पिता वेंकटप्पा नायकर एक सुलझे हुए व्यापारी थे। वे कई व्यापारिक संस्थानों के स्वामी थे। 19 वर्ष की आयु में इनका विवाह नाग अम्ममाल नामक 13 वर्षीय लड़की से हुआ था। नायकर बचपन से ही रुढ़िवाद के प्रति विद्रोही लगाते हुए अपनी रोबीली आवाज में कहा कि जिस कांग्रेस पर जातिवाद प्रभावी है, उस कांग्रेस को छोड़ दूं। तमिलनाडु का यह सक्रिय सुधारवादी व्यक्तित्व, जातिग्रस्त समाज के विरुद्ध संघर्ष के काम में तल्लीन हो गये।

श्री नायकर ने अपने संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए गंभीर अध्ययन किया। दूसरे देश अंधविश्वास तथा रुढ़िवाद से मुक्ति पाने के लिए किस रूप में संघर्ष करते हैं, यह जानने के लिए वे सन् 1931 में फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, रूस, इंग्लैंड आदि देश गये। स्वदेश लौटने पर उन्होंने आत्मसम्मान आन्दोलन शुरू किया। 'वर्ण व्यवस्था तथा रुढ़िवाद को समाप्त करो' यह उनका नारा था। जस्टिस पार्टी के वे सदस्य हो गये। पार्टी के संस्थापक सदस्यों सर पी. त्यागरायार, डॉ. टी. एम. नायर, पनांगल राजा आदि ने इनका स्वागत किया। जस्टिस पार्टी की राजनीतिक गतिविधियों में पूरा सहयोग दिया।

दिसम्बर 1938 में मद्रास में आयोजित जस्टिस पार्टी के अधिवेशन में तो वे पार्टी के अध्यक्ष चुने गये। वे उस समय जेल में थे। जेल में ही तैयार किया गया अध्यक्षीय भाषण सर ए.टी. पिन्निरसेवेन ने पढ़ा। भाषण इतना प्रभावशाली, संवेदनशील तथा प्रखर था कि अधिवेशन में आये लाखों श्रोताओं की आंखें नम हो गयीं। उपस्थित श्रोताओं ने अपनी–अपनी भाषा में यह शपथ ली–'हमारे प्रिय नेता यद्यपि तुम इस समय जेल में हो, बाद ब्राह्मण वर्ग का सामाजिक ढांचा और अधिक कठोर हो गया था। पंडित वर्ग नये–नये कपोल कल्पित व्रत और उनके समर्थन के लिए काल्पनिक कथाएं लिखने में लिप्त रहे। राजा रामदेव राव यादव के ब्राह्मण प्रधानमंत्री हेमाद्रि ने 'चतुवर्ग चिन्तामणि' नाम ग्रंथ में लगभग दो हजार व्रत लिखे। वर्ष के दिन 365 हैं और व्रत हैं दो हजार। एक दिन तथा तिथि में 6–6, 7–7 व्रत। 12वीं, 13वीं सदी के ब्राह्मण वर्ग के संबंध में विद्वान डॉ. पेडंसे ने लिखा है, उस समय के ब्राह्मणों में पंडित्य था, परन्तु हृदय नहीं था। वास्तविक धर्म तत्व को भुला कर ब्राह्मण वर्ग ने बाह्य व्रतादि नियमों तथा आचारों को अहमियत दे रखी थी। ब्राह्मणों के सामाजिक और धार्मिक रीति–रिवाज तथा जनता के प्रति अत्यंत असहिष्णु रूप ने तमिलवासियों में जाति की संकीर्ण विचारधारा को विकसित किया। दक्षिणवासियों को धर्म के नाम पर निरर्थक ढकोसले में लिप्त देखकर अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण पर आक्रमण कर दिया और यादवों के राज्य तथा विजय नगर पर आसानी से अधिकार कर लिया। फिर धर्मान्तर की लहर दौड़ गयी। ब्राह्मणवाद से तंग आकर शूद्र, अतिशूद्र इस्लाम को कबूल करने लगे। तमिल विधानसभा में (1981) में वित्तमंत्री नेदुनचेशियान ने बताया था कि दक्षिण में धर्म परिवर्तन एक मामूली बात है और प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 14वीं तथा 15वीं शताब्दी में इक्कीस लाख लोगों ने हिन्दू धर्म

डा. भीमराव अम्बेडकर की कीर्ति

कोटि–कोटि विद्वान महर्षि की
भारत भूमि तपस्थली है,
महा विद्वान, भारत विभूति
डा. भीमराव अम्बेडकर की भी,
यही जन्म स्थली है।
बाबा साहब विद्याभूषित,
'भारतरत्न' से अलंकृत हैं,
देश प्रतिनिधि, संविधान प्रेणता,
दलित मसीहा से भी स्वीकृत हैं।
अपने देश प्रदेश में तो,
प्रायः सभी विद्वान महान बनते हैं,
पर जो विदेशों में अपनी प्रतिभा दिखायें
वे सबसे महान होते हैं।
स्वामी विवेकानन्द व डा. अम्बेडकर
विदेशों में जो प्रतिभा दर्शा आये,
उनकी टक्कर में कोई नहीं,
भारत का भाल ऊंचा कर पाये।
गये विद्यालय में, जब पढ़ने अम्बेडकर
जानकर अछूत हुआ तिरस्कार,
सवर्ण संग नहीं बैठ सकते एक चट,
विद्यालय में भी नहीं था, उच्च विचार।
रक्त होता है एक सभी का,
ईश्वर का है यही विधान,
ऊंच–नीच का ध्यान नहीं होता,
रक्त लाल होता, सर्व जाति का,
अकाट्य निदान।
उपेक्षित जानकर, अपने को अम्बेडकर,
लिये हृदय में ठान;
विद्यार्जन करके ही हम सब,
कर सकते हैं दलितोत्थान।
मात–पिता दिग्दर्शन पाये,
करो एकलव्य का ध्यान,
धनुर्विद्या द्रोणाचार्य नहीं सिखाये
पर स्वयं अभ्यास से,
एकलव्य हुए महान।
सरस्वती माता सबकी होती,
करती नहीं वर्ण जाति विचार,
लगनशील जो होता है,
उन्हें देती है विद्या अपार।
काक चेष्टा, बक ध्यान किये वे,
स्वान निद्रा से किये विहान,
अहर्निशि पढ़कर के दिखाये,
विद्वान बनने का यही निशान।
अर्थशास्त्र राजनीति के ज्ञाता,
विधिशास्त्र में हुए विद्वान,
प्रथम विधि मंत्री पद पाये,
अध्यक्ष पद से बनाये संविधान।
समाजशास्त्र का सटीक मंथन करके,
समाज का किया उत्थान,
देशसेवा में घुटने नहीं टेके,
रहे वे सेवक देश महान।
भारत देश से अमेरिका भेजा,
प्रतिनिधि बनाकर देश विद्वान,
अपनी ज्ञान–प्रभा से वे,
देश की प्रतिष्ठा बढ़ाये गुलाब समान।
'भारतरत्न' से अलंकृत हैं वे,
'दलित–मसीहा' हैं वे ईश' समान,
'काशी' देश दलितों को उठाये,
भारत संविधान में दे सुरक्षित स्थान।
गांधी जी सबसे कहते थे,
जब तक नहीं होगा, दलितोत्थान,
तब तक देश प्रगति पर न होगा,
यह था उनका अकाट्य निदान।
सरस्वती वन्दन, काट–उर–बन्धन,
ज्योतिमय कर हृदय सर्व
भेदभाव कलुषित विचार को,
'काशी' धराधाम से मिटा,
जग को जगमग कर दे माता
जग को जगमग कर दे। •

– काशीनाथ राम प्रजापति

हिमायती
4 / फरवरी (द्वितीय), 2018 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 फरवरी, 2018

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी, 2018

पृष्ठ 1 का शेष....दलित साहित्यकार प्रतिस्पर्धा कर अपने श्रम से लम्बी लकीर खींचें

कायम है, हमें और तेजी के साथ सजगता के साथ काम करना होगा और हमारे पूर्वजों व गुरुओं ने जो रास्ता दिखाया है उस पर दृढ़ता से अमल करना होगा। हरियाणा प्रदेश अकादमी के महामंत्री डा. सुरेन्द्र कुमार सेलवान ने कहा कि हमें अपनी लेखनी की असल ताकत को पहचान कर उसका सही दिशा में इस्तेमाल करना होगा। तभी हम गुरू रविदास जी के बेगमपुरा लोकतांत्रिक समाज की कल्पना को पूरा कर सकेंगे।

अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. जय सुमनाक्षर ने तेलंगाना प्रदेशाध्यक्ष श्री जितेन्द्र मनु को सफल सम्मेलन के आयोजन की बधाई दी और कहा कि उनका समता व भाईचारे का सन्देश अन्य प्रदेशों में जाकर दलितोत्थान में सहायक होगा।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने अपना उद्‌बोधन कवि इकबाल के शेर से शुरू किया–'खुदी को कर बुलन्द इतना, की हर तकदीर से पहले, खुदा आकर तुमसे पूछे बता तेरी रजा क्या है?'

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि जिन लोगों को अपने काम पर पूरा विश्वास होता है, भरोसा होता है, वे तकदीर के सहारे नहीं बैठे रहते। वे दृढ़ता के साथ तल्लीनता के साथ अपने काम में मगन रहते हैं और अपने कर्म बल के सहारे इतना ऊंचा उठ जाते हैं कि एक दिन उसकी तकदीर लिखने से पहले खुदा खुद उससे आकर पूछता है कि बता तू क्या चाहता है? हमारे दलित समाज के लोग कभी भी भाग्य, भगवान, खुदा या तकदीर के सहारे नहीं बैठे और न ही कभी हाथ की रेखाओं पर विश्वास किया है। उन्होंने सदैव विश्वास किया है तो अपने कार्य पर, अपनी मेहनत पर, अपने श्रम पर, जो हमारे गुरु संत शिरोमणि रविदास जी ने सिखाया–

'रविदास श्रम कर खाइये,
जब लौ पार बसाय।
करम बंधन में रम्य रहो,
फल की तजो न आस।
श्रम मनुष्य का धर्म है,
सत भाखै रविदास।।

इसलिए हमारा दलित समाज सदैव श्रम व करम पर जोर देता रहा। इससे वह सामाजिक विषमताओं और शिक्षा–सम्पत्ति–सत्ता के अधिकार विहीन होते हुए भी आज तक जीवित रहा। मनु की वर्ण व्यवस्था के नाम पर उसका भरपूर शोषण व दमन किया गया, यहां तक की उसे जीवित रहने के लिए 'गोबरान्न', जूठन व मुर्दार (मरे पशु का मांस) खाना पड़ा। इसलिए उसकी सोच व बुद्धि भी मलीन हो गई और उसकी विवेक शक्ति भी खत्म हो गई और वह पशुवत अधिकारविहीन जीवन ढोता रहा। ब्राह्मणवादी साहित्य ने उसे समानता के अधिकार दिलाने के लिए न कभी कुछ लिखा और न ही इस पशुवत जीवन से उभरने के लिए उसे प्रेरित किया। दलित साहित्यकारों ने दलित साहित्य के माध्यम से जहां समाज में उसके समता के अधिकार के लिए बिगुल बजाया, वहीं सामाजिक विषमताओं के खिलाफ खड़े होने के लिए उसे प्रेरित किया। यही कारण है कि सभी भाषाओं में दलित साहित्य ने दस्तक दी और अपना परचम फैलाया–स्कूल, कालेज विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी उसने अपनी पहुंच बनाई और पीएच.डी., डी.लिट्, एम. फिल जैसी डिग्रियों के लिए शोध कार्यक्रमों के लिए उसे मान्यता के साथ प्राथमिकता भी मिली। दलित साहित्य ने मनुष्य को उसकी असली पहचान दी, उसके जीने का सही मार्ग प्रशस्त किया। इससे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, न्यायियक, सत्ता–शासनिक प्रशासनिक क्षेत्रों में भारी उथल पुथल हुई है। सामाजिक समता की जो लड़ाई केवल दलितों की थी, अब उससे प्रेरणा लेकर सभी पिछड़ी–अगड़ी जातियां भी अब अपने अधिकारों के लिए खुलकर संघर्ष करने लगी हैं। पर दलितों ने स्वयं भोगा है इसलिए उनका स्वयं भोगे जीवन की दास्तां ही 'दलित साहित्य' है, जिसे अन्यतर लोग नहीं लिख सकते।

इसलिए आज दलित साहित्यकारों का कर्तव्य है कि वे निःस्वार्थ भाव से दलितोत्थान हेतु दलित साहित्य का सृजन करें जिससे समाज में विषमता खत्म हो और दलित उससे प्रेरित होकर प्रगति के सभी क्षेत्रों में अपने को सबल बनायें और हजारों वर्षों से उसे जिन अधिकारों से वंचित रखा है, उन्हें प्राप्त कर सकें। इससे भले ही वर्तमान पीढ़ी को ज्यादा लाभ न हो, पर आने वाली अगली पीढ़ी जरूर लाभान्वित होगी।

दलितोत्थान का क्षेत्र बहुत व्यापक है। दलित साहित्यकार उनमें से अपनी रुचि का क्षेत्र स्वीकार कर अपना कार्य निष्ठा से शुरू करें और उसमें पारंगता हासिल करें। दलित समाज के उत्थान के लिए जहां दलित साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, कथाकार चाहिए वहीं सांस्कृतिक उत्थान के लिए दलित कलाकारों (नृत्य, गायन, वादन) की भी जरूरत है। इस तरह जहां दलित समाज सेवकों की आवश्यकता है, वहीं सत्ता–शासन–प्रशासन में दक्ष दलित प्रतिभाओं की भी जरूरत है। शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार में भी दलितों की दक्षता व अग्रसरता की जरूरत है। अगर दलित समाज के सजग युवा–युवती अपने–अपने क्षेत्र में दलितोत्थान के लिए कार्य करेंगे तो दलित समाज समर्थ समाज में बदल जायेगा। अलग–अलग क्षेत्रों में कार्यरत दलित नेतृत्व को मिलकर जब समग्रता आयेगी तो हम भगवान बुद्ध, गुरू रविदास, सद्‌गुरू कबीर, महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द, बाबू जगजीवन राम व बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समतामूलक समाज की कल्पना को साकार कर सकेंगे।

पर दलित समाज में अभी ऐसी सोच बनी नहीं है। हमारी सोच हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा की होनी चाहिए। परस्पर लड़ने–भिड़ने, एक दूसरे पर लांछन लगाने, नीचा दिखाने, अपमान करने, शारीरिक मानसिक आघात पहुंचाने से हमें बचना होगा। हमें हर क्षेत्र में आगे बढ़कर प्रतिस्पर्धा करके बड़ी लकीर खींचने की 'होड' पैदा

सम्पादकीय का शेष भाग....जुमलाबाजी या वायदा खिलाफी

के अभाव में घर का खर्च चलाना मुश्किल हो गया। इस पर प्रधानमंत्री बार–बार कहते रहे कि बस कुछ दिन और कष्ट सह लो, अच्छे दिन आने वाले हैं। इसके साथ ही वे नोटबंदी के साथ 'डिजीलाईजेशन' का पाठ पढ़ाने लगे कि वे बैंक से 'चेक' द्वारा नहीं, अपने मोबाईल फोन से पैसा निकालें। देश की 80 फीसदी आबादी जो मोबाईल द्वारा पैसा लेन–देन से अनभिज्ञ है वह प्रधानमंत्री के नये अवतार से अचम्भित रह गई। खैर, अच्छे दिनों की आशा में उन्होंने इसे भी झेला। 'नोटबंदी' के बाद एक नया अवतार आया 'जी.एस.टी.' यानी पदार्थ व सेवा कर। इसमें अलग–अलग चीजों पर व सेवा पर अलग–अलग कर का प्रावधान किया गया। इस नये करविधान से रहा–सहा कारोबार भी ठप्प पड़ गया। इससे लोग बेरोजगार होकर और बेहाल हो गये। दुकानदारों और सेवा संस्थाओं को कई महीनों तक समझ में नहीं आया कि वे पुराने माल का क्या करें, नया माल कैसे लें। फिर नया 'जी.एस.टी.' नम्बर लेने व हिसाब–किताब रखने के लिए चार्टर्ड एकाउंटेट रखने का खर्च व झंझट और बढ़ गया।

'नोटबन्दी' व 'जी.एस.टी.' लागू होने से अच्छा चलता–फिरता कारोबार ठप्प पड़ गया। अधिकांश दुकानों पर ताले पड़ने के बाद बाजार बंद हो गये और इस 'जी.एस.टी.' के खिलाफ लोग 'हड़ताल' पर चले गये। इसके बाद बार–बार 'जी.एस.टी.' की दरें बदली गई। कई चीजों पर टैक्स 28 फीसदी से घटाकर 18 फीसदी किया गया। इससे कुछ लोगों को राहत की सांस मिली। पर अभी कारोबार पटरी पर आने वाला था कि दिल्ली के दुकानदारों के सामने एक नई मुसीबत आ खड़ी हो गई–'सीलिंग' के नाम पर। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर निगरानी कमेटी ने गत 10–12 वर्ष पहले बनी दुकानों को गिराना, तोड़ना, फोड़ना शुरू कर दिया। लोगों ने अपनी दुकानों को तोड़–फोड़ से बचाने के लिए बाजार बन्द कर दिये और वे इस सीलिंग के खिलाफ 'दिल्ली बन्द' का नारा लगा सड़कों पर आ गये। दिल्ली में 2 फरवरी से 4 फरवरी तक सभी बाजार बन्द रहे। करोड़ों रुपयों का नुकसान हो गया। लोगों में अब भी दहशत है। व्यापारियों का माल न बाहर जा पा रहा है और न ही बाहर का व्यापारी चीजें खरीदने के लिए दिल्ली आ रहा है। वहां काम करने वाले मजदूरों को दो जून की रोटी मिलना मुश्किल हो गया है।

ऐसे में व्यापारी, दुकानदार, किसान, खेत मजदूर, दिहाड़ी मजदूर, छोटे कारोबारी मोदी जी से एक ही सवाल कर रहे हैं कि आपकी सरकार को 4 साल बीत गये, अब अच्छे दिन कब आयेंगे? वे अब यह भी पूछते हैं कि आपके उन वायदों का क्या हुआ जिनके आधार पर आपने 'वोट' मांगे थे और आपके वायदों पर विश्वास कर लोगों ने खुलकर आपके 'कमल' को वोट दिये थे। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह का कहना है कि चुनाव में किये ये वायदे तो जुमलाबाजी थे यानी उनमें कोई सच्चाई नहीं है। वे लोक लुभावने वायदे तो चुनाव में वोट लेकर चुनाव जीतने के लिए थे। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह जब सब वायदों को 'जुमलाबाजी' बताकर साफ धता दिखा रहे हैं तो अब उनके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कौन पूछे कि अब अच्छे दिन कब आने वाले हैं, कब काला धन विदेश से वापिस आयेगा? कब हर नागरिक के बैंक अकाउंट में 15–15 लाख रु. सरकार की ओर से जमा होंगे? कब देश से भ्रष्टाचार, कालाबाजारी बंद होगी? कब शिक्षित बेरोजगारों को हर वर्ष 2 करोड़ नौकरियां मिलेंगी? कब किसानों, मजदूरों की आत्महत्यायें बंद होंगी? कब महिलाओं को बलात्कारी और गुण्डों से सुरक्षा मिलेगी? कब देश के हर नागरिक को रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति होगी? कब शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा हर नागरिक को मुहैया कराई जायेगी? कब देश की सीमायें सुरक्षित होंगी और सेना के जवानों का रोज–रोज 'शहीद' होना रुकेगा?

आलम तो अब यह है कि अनुसूचित जाति/जनजाति की नौकरियों का जो 'बैकलॉग' पिछले दस साल से खाली पड़ा उसे भरने की अपेक्षा मोदी सरकार उन पदों को खत्म ही कर रही है। योजना आयोग द्वारा प्रदत्त कम्पोनेन्ट प्लान की राशि भी दलितोत्द्धार व दलित विकास पर खर्च न करके अब उसे भी बट्टे खाते में डाल दिया जायेगा या अन्य मदों में खर्च कर लिया जायेगा। अब किससे आस करें, किससे फरियाद करें, जब प्रतिष्ठित लोग अपने वादों को 'जुमलेबाजी' कहकर नक्कार दें।

क्या दलितों की यह भीड़ (भेड़) समय–समय पर सभी राजनीतिक पार्टियों की 'जुमलाबाजी' से धोखा खाते हुए लूटती पिटती रहेगी? •

करनी होगी, न कि किसी के द्वारा खींची प्रगति की लकीर को मिटाकर अपनी नई लकीर खींचने की। यह समाज के लिए आत्मघाती कदम होगा, जिससे समाज आगे न जाकर पीछे ही जायेगा। इसीलिए मेरा बार–बार यही कहना है कि आप प्रतिस्पर्धा में दूसरों से बड़ी लकीर अपने कार्यों से खींचने का उद्यम करें और दूसरों की खींची लकीर को मिटायें नहीं, उसके नीचे अपनी बड़ी लकीर खींचें। इससे पहले वाली खींची लकीर स्वयं छोटी हो जायेगी और आपकी बड़ी लकीर को सराहना मिलेगी, मान्यता मिलेगी। दूसरे नई पीढ़ी के लोग आपसे प्रेरणा ले सकेंगे।

डा. सुमनाक्षर ने सम्मेलन की सफलता के लिए अकादमी की तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र मनु और उनकी समग्र टीम को बधाई दी। उन्होंने जितेन्द्र मनु के अथक परिश्रम व अटूट लगन की भी प्रशंसा की जिसने थोड़े समय में ही न केवल दक्षिण भारत के राज्यों के कार्यकर्त्ताओं के बीच बल्कि शेष भारत में भी अपनी नाम व काम की छाप छोड़ी है। वह दलित युवाओं के लिए आज 'आईकोन' व प्रेरणा पुरुष बन गये हैं। समारोह के समापन पर दलित प्रतिभाओं को साहित्य रत्न, सेवा रत्न, कला रत्न, विद्या रत्न अवार्डों से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय गान–जन गण मन के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ।•

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A–9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली–33 में मुद्रित तथा 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली–9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक – श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।